# अक्रम यूथ

जनवरी २०१८ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹ २०

## शुद्ध प्रेम

Dada's Youth Network

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ५, अंक : ९
अखंड क्रमांक : ५७
जनवरी २०१८

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

**Printed & Published by**
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

**Owned by**
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

**Printed at**
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr. RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar
कुल २४ पेज कवर पेज सहित

**सदस्यता शुल्क**
**वार्षिक**
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
**पाँच वर्ष**
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

# अनुक्रमणिका

अविश्वसनीय भेंट 04
ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि 07
एक प्रेम ऐसा भी... 08
ज्ञानी विद यूथ 10
महान पुरुष की झाँकी 12
क्या आपको आकर्षण... 14
Akram pedia 16
दादाश्री के पुस्तक की झलक 18
सच्चे प्रेम की समीक्षा 20
जोक्स 22
Wisdom Workshop 23

# संपादकीय

मित्रों, हम में से कोई भी "प्रेम" शब्द से अन्जान नहीं है। कहीं न कहीं किसी न किसी प्रकार से सभी प्रेम की खोज में हैं और प्रेम की व्याख्या हर एक व्यक्ति के अनुरूप बदलती रहती है। बच्चे से पूछो तो अपने माता-पिता से चॉकलेट मिलना, वह उसके लिए उनका प्रेम है, एक शादीशुदा स्त्री की इच्छा होती है कि उसका पति उसे अच्छी तरह से समझे और वही उसके लिए पति का प्रेम है, जबकि बुजुर्ग इंसान को यह अच्छा लगता है कि उसके साथ कोई समय बिताए। इस प्रकार अलग-अलग उदाहरणों से प्रेम के अलग-अलग अर्थ निकलते हैं। माता का प्रेम पत्नी के प्रेम से अलग होगा और पत्नी के प्रेम से खुराक के प्रति प्रेम अलग होगा। ज्यादातर शुद्ध प्रेम की इस खोज के दौरान हम अनेकों व्यक्तियों को दुःख पहुँचा देते हैं, हमारा पतन होता है और भटक जाते हैं फिर भी दुर्भाग्य से हम प्रेम की खोज नहीं कर सकते... लेकिन क्या हम जानते हैं कि सच्चा प्रेम क्या है? नीरू माँ कहते हैं कि इस काल में सच्चा प्रेम मुश्किल से ही मिलता है। वह कभी भी निरंतर नहीं होता और जब व्यक्ति को उसमें असफलता मिलती है तब उस नुकसान को भरना बहुत मुश्किल हो जाता है। चलो, इस अंक में हम प्रेम को दादाजी की दृष्टि से देखें और सर्वत्र प्रेम फैलाना सीखें...

**-डिम्पल मेहता**

# अविश्वसनीय भेंट

**"हैप्पी बर्थ डे टू यू, हैप्पी बर्थ डे टू यू...." रात के बारह बजे यह स्वर सुनकर पराग बिस्तर पर बैठ गया। घर के सदस्यों को केक और मखमल के कपड़े से ढकी टोकरी लेकर अपने सामने खड़ा हुआ देखा। खुशी से वह झूम उठा।**

"भाई, मोमबत्ती को फूँक मारकर जल्दी से बुझाओ और एक विश (इच्छा) करो" छोटे भाई नील ने केक को सामने रखते हुए कहा। पराग ने फूँक मारकर मोमबत्ती बुझाई और केक काटा।

"हैप्पी बर्थ डे, बेटा!" पराग का दिया हुआ केक का एक टुकड़ा खाकर उसकी मम्मी, मिसिज़ बापोदरा ने प्रेम से आशीर्वाद दिए। दूसरा टुकड़ा पापा, मिस्टर बापोदरा को देते हुए कहा, "डैड, यह आपके लिए।" "हमारा बेटा अठारह साल का जवान हो गया।" कहकर, उन्होंने गर्व से केक खाया और उसे खिलाया, तभी नील बोल उठा, "भाई, यह आपके लिए।" खुशी-खुशी उसने टोकरी भाई को दी। पराग ने मखमल का कपड़ा हटाकर देखा तो उसे दो बड़ी काली, चमकती आँखें दिखाई दीं। "पप्पी वाह! थैन्क यू मॉम, थैन्क यू डैडी!" कहकर उसने पप्पी को उठाया, और तुरंत ही पप्पी सूंघने और चाटने लगा। "इसका नाम क्या रखेंगे, भाई?" "स्नोई (बर्फीला)" इसके सफेद बर्फ जैसे रोएँ देखकर पराग ने उसका नामकरण किया। सभी खुश हो गए।

कुछ ही समय में स्नोई और पराग अच्छे दोस्त बन गए। पराग कॉलेज से आते ही उसकी गंध से, स्नोई उसके पास दौड़कर आ जाता। घर पर दोनों साथ

में खेलते और रात को बाहर टहलने जाते। स्नोई एक समझदार, असाधारण रूप से चालाक और दयालु कुत्ता था।

एक बार पराग रात को जगकर कॉलेज का असाइन्मेन्ट (दिया गया काम) पूरा कर रहा था, जो उसे दूसरे दिन कॉलेज में देना था। उसे ज़रा डर लगा कि क्या वह रातभर जगकर काम पूरा कर पाएगा या नहीं? स्नोई यह बात समझ गया और पूरी रात पराग के साथ जागा। स्नोई साथ में होने की वजह से पराग अपना काम थके बिना कर पाया। और दोनों सुबह चार बजे सो गए। पराग की आँख खुली और घड़ी में देखा तो आठ बज गए थे। अरेरे! मुझे तो साढ़े आठ बजे कॉलेज पहुँचना था! हड़बड़ी में पराग उठकर सीधे बाथरूम में घुस गया और कुछ ही मिनटों में तैयार होकर बाहर निकल गया, दौड़कर रसोई में गया, "मॉम, ब्रेकफास्ट (सुबह का नाश्ता) तैयार है?" गरम पराठा लेकर, उसके ऊपर अचार चुपड़कर वह फटाफट खा गया। "पराग बेटा, धीरे से, शांति से चबाकर खा। देर हो रही हो तो टैक्सी से कॉलेज चले जाना", मम्मी ने उसकी जल्दबाज़ी देखकर कहा। "मॉम, टैक्सी में जाऊँगा फिर भी देर हो जाएगी।" कहकर अंतिम टुकड़ा मुँह में रखा, बैग लेकर टैक्सी की ओर दौड़ा। साढ़े आठ बजे मुश्किल से कॉलेज पहुँचा। प्रोफेसर मैथ्यु सभी के असाइन्मेन्ट ले रहे थे। सबमिशन के लिए पराग ने बैग खोला तो उसमें असाइन्मेन्ट था ही नहीं...

पराग के कॉलेज जाने के बाद घर पर स्नोई उसके रूम में गया। वहाँ उसने अपने मालिक के, जो पूरी रात बैठकर पेपर तैयार किए थे, उसे वहीं पड़े हुए देखे। उसने उन पन्नों की किताब मुँह में उठाई, दौड़कर पराग के कॉलेज पहुँचा। दरवाज़े पर खड़ा चौकीदार उसे रोके उससे पहले, पराग के पैर की गंध सूँघते हुए छलाँग मारकर उसकी क्लासरूम तक पहुँच गया।

पराग मैथ्यु साहब को समझा रहा था कि उसने असाइन्मेन्ट लिखा है लेकिन जल्दी में घर भूल गया है। साहब को उसमें कुछ तथ्य नहीं लगा। तभी उसकी नज र अंदर आए हुए स्नोई पर पड़ी। स्नोई को देखकर आश्चर्य हुआ, लेकिन उसके मुँह में असाइन्मेन्ट देखकर वह सब कुछ समझ गया।

"स्नोई तू मेरा असाइन्मेन्ट लेकर आया! थैन्क यू!" उसने खुश होकर स्नोई को पुचकारा और असाइन्मेन्ट लेकर साहब को दिया। लेकिन उसे ख्याल आया कि, स्नोई यहाँ कैसे पहुँचा होगा? उसे याद आया कि एक दिन शाम को स्नोई के साथ टहलते हुए वह अपने कॉलेज तक पहुँच गया था और उसने स्नोई को अपना कॉलेज दिखाया था। आज स्नोई ने उसे बचा लिया!

एक रात सभी गहरी नींद में सो रहे थे, स्नोई भी। स्नोई को कुछ आवाज़ सुनाई दी और वह सतर्क होकर टोकरी से बाहर निकल आया। उसने एक साँप को पराग के बिस्तर पर देखा, जो पराग को काटने की तैयारी में था। स्नोई ने छलाँग लगाई और साँप को दबोच लिया। साँप ने बचाव में स्नोई को डंक मार दिया। स्नोई ने भी उसे काट लिया। दोनों के बीच संघर्ष हुआ और ज़हर के असर से स्नोई के मुँह से झाग निकलने लगी, उसकी शक्ति क्षीण होने लगी लेकिन उसने साँप को नहीं छोड़ा। अंत में दाँत का घाव लगने से साँप की मृत्यु हो गई और निस्तेज साँप को देखकर अस्वस्थ हुआ स्नोई भी ज़मीन पर गिर पड़ा। उस पीड़ा में भी उसकी आँखें पराग को ढूँढ रही थीं। छीना-झपटी की आवाज़ से पराग जाग गया। उसने मरे हुए साँप को और स्नोई को देखा। "स्नोईईई..." उसने तुरंत ही स्नोई को उठा लिया, लेकिन तब तक तो बहुत देर हो गई थी। अपने मालिक को देखकर स्नोई ने संतोष पूर्वक अंतिम श्वास लिया, और हमेशा के लिए आँखें बंद कर लीं। पराग की आँखों में आँसु भर आएँ। वह समझ गया था कि एक बार फिर स्नोई ने उसे बचा लिया लेकिन इस बार जीवन का बलिदान देकर।

पराग ने एक विश्वासपात्र, प्रेमालु और वफादार साथी को गँवा दिया। उसे लगा कि उसका जीवन उसके श्वान मित्र की देन है। उसने स्नोई के लिए शायद ही कुछ किया था जबकि स्नोई अपना प्रेम पराग पर न्यौछावर करता रहा... शायद सच्चा प्रेम ऐसा ही होता होगा।

पराग को समझ में आ गया कि प्रेम के पीछे कोई आशय नहीं होता। प्रेम में कोई अपेक्षा नहीं होती। प्रेम करने वाला कुछ भी सोचे बिना, ज़रूरत पड़ने पर सब कुछ समर्पित करने या जीवन का बलिदान देने में भी हिचकिचाता नहीं है।

उस घटना के बाद पराग बहुत बदल गया और उसने स्नोई की तरह परिवार के सदस्यों, नज़दीकी लोगों, दोस्तों और आसपास के सभी व्यक्तियों को वैसा ही प्रेम देने की प्रतिज्ञा की।

चलो! देखते हैं, दादाश्री प्रेम के बारे में क्या कहते हैं...

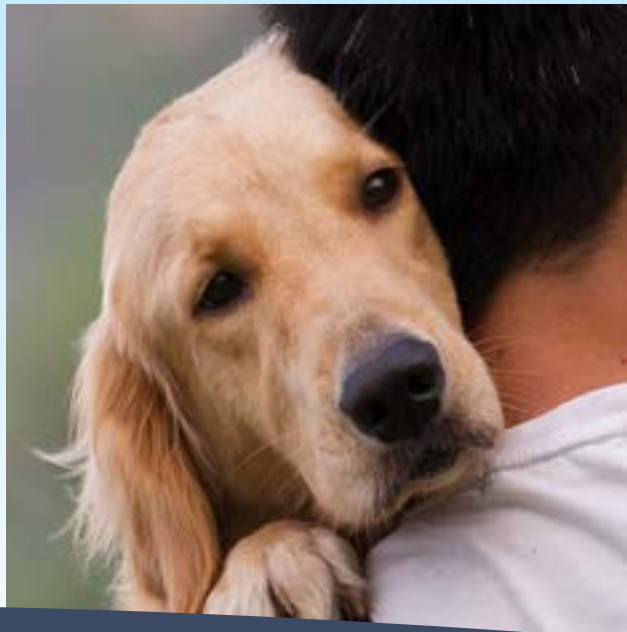

# ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

## इसमें सच्चा प्रेम कहाँ?

**आपका प्रेम सच्चा है?**

आपके बेटे पर आपको प्रेम है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** है ही न!

**दादाश्री :** तो फिर कभी उसे मारते हो? बेटे को किसी दिन मारा नहीं है? डाँटा भी नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** वह तो कभी-कभी डाँटना तो पड़ता ही है न!

**दादाश्री :** प्रेम ऐसी चीज़ है कि दोष नहीं दिखते। और यदि दोष दिखते हैं तो वहाँ प्रेम नहीं होता। ऐसा आपको लगता है? मुझे इन सभी पर प्रेम है। किसी का भी दोष मुझे अभी तक दिखा नहीं है। तो आपका प्रेम किस पर है यह बताओ न मुझे? आप कहते हो "मेरे पास प्रेम की सिलक है" तो कहाँ है?

**सच्चा प्रेम निःस्वार्थ होता है**

**प्रश्नकर्ता :** फिर तो ईश्वर के प्रति प्रेम, वही प्रेम कहा जाता है न?

**दादाश्री :** नहीं। आपको ईश्वर के प्रति भी प्रेम नहीं है! प्रेम अलग चीज़ है। प्रेम किसी भी हेतु के बिना होना चाहिए, निःस्वार्थ होना चाहिए। ईश्वर के प्रति प्रेम हैं तो औरों के प्रति प्रेम क्यों नहीं? क्योंकि उनसे कुछ काम है आपको! "मदर" के प्रति है, तो कोई काम है। लेकिन प्रेम निःस्वार्थ होना चाहिए। मुझे आपके प्रति प्रेम है और इन सभी पर भी प्रेम है लेकिन उसके लिए मेरा कुछ हेतु नहीं है!

**प्रेम में स्वार्थ नहीं होता**

बाकी, यह तो जगत् में स्वार्थ है। "मैं हूँ" ऐसा अहंकार है तब तक स्वार्थ है और जहाँ स्वार्थ होता है वहाँ प्रेम नहीं रह सकता, और जहाँ प्रेम होता है वहाँ स्वार्थ नहीं रह सकता।

इसलिए जहाँ स्वार्थ नहीं है वहाँ शुद्ध प्रेम होता है। स्वार्थ कहाँ नहीं है? तो जहाँ "मेरा-तेरा" नहीं है वहाँ स्वार्थ नहीं है। "मेरा-तेरा" है वहाँ अवश्य स्वार्थ है और जहाँ "मेरा-तेरा" है वहाँ अज्ञानता है। अज्ञानता की वजह से "मेरा-तेरा" होता है। "मेरे-तेरे की वजह से स्वार्थ है और जहाँ स्वार्थ है वहाँ प्रेम नहीं होता। और "मेरा-तेरा" कब नहीं होता? जब ज्ञान होता है तब "मेरा-तेरा" नहीं होता। "ज्ञान" के बिना तो "मेरा-तेरा" होगा ही न? फिर भी यह समझ में आए ऐसी चीज़ नहीं है।

# एक प्रेम ऐसा भी...

एक पिता अपने १८ साल के बेटे के साथ खरीददारी करने एक कपड़े की दुकान में गए। वहाँ पिता ने बेटे के साइज़ के पेन्ट-शर्ट दिखाने के लिए कहा और दुकानदार ने दिखाए। सभी शर्ट बेटे के साइज़ के थे। फिर भी बेटे ने कहा, "पापा, थोड़े बड़े शर्ट लेते हैं, वैसे भी शर्ट तो पेन्ट में डालना ही पड़ता है। यदि थोड़ा लंबा शर्ट लेंगे तो अगले साल भी काम में आ सकता है।"

पिता बेटे के इस विचार से बहुत खुश हुए और कपड़े की दुकान से निकलकर मोबाइल के शो रूम में गए।

"बेटा, अब तुम कॉलेज में पढ़ते हो तुम्हारे पास एक मोबाइल होगा तो ठीक रहेगा। फिर तुम्हें जब कभी बाहर जाना हों तब हम तुम्हारे संपर्क में रह सकते हैं।"

"लेकिन पापा, मैं बाहर जाऊँगा तो अपने दोस्तों के साथ ही होऊँगा। उनके पास मोबाइल होगा ही, उनका नंबर मैं आपको दे दूँगा। उससे तो दादाजी के लिए अच्छे चश्मे ले लेते हैं। उनके पुराने चश्मे के काँच बहुत खराब हो गए हैं।"

पिता इन सभी बातों को सुनकर आश्चर्य चकित हो गए और बेटे से पूछा, "बेटा, तुझे इतनी समझ किसने दी?"

बेटे ने पिता से कहा, "आप पूरी ईमानदारी से नौकरी करते हैं और मर्यादित तनख्वाह में घर चलाते हैं। सभी आपकी ईमानदारी की बातें करते हैं, तारीफ करते हैं। आपके जैसे पिता पाकर, मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ।"

हमारे मोहल्ले में ही रहने वाले और आपके साथ नौकरी करने वाले एक चाचा ने अनीति के रास्ते से बहुत पैसा इकट्ठा किया है। पापा, उनके सामने तो लोग उनकी वाह-वाह करते हैं, लेकिन पीछे से उनके लिए "चोर, भ्रष्टाचारी" जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

थोड़ा रुककर बेटे ने अपनी बात पूरी की "पापा, मेरे पास एक जोड़ी जूते कम होंगे तो चलेगा लेकिन मेरे पापा के लिए कोई ऐसे शब्दों का प्रयोग करेगा वह नहीं चलेगा। आपकी प्रमाणिकता वही मेरे लिए सब कुछ है। बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

# सच्चा प्रेम अर्थात्

बड़ों के प्रति कृतज्ञता हो, उनके पॉज़िटिव निरंतर लक्ष में रहें, खुद के लिए ही नहीं लेकिन अन्य के लिए भी सोचे...

# ज्ञानी विद यूथ

मेरे पेरेन्ट्स मुझे प्रेम नहीं करते और मुझे नहीं समझते,

कई बार पार्टी में जाने के लिए मना करते हैं।

मेरे चॉइस के कपड़े पहनने से मना करते हैं।

मुझे लेटेस्ट (न्यू मॉडल) फोन नहीं दिलाते।

हमेशा भाई-बहन का जो अधूरा काम होता है, उसे मुझसे पूरा करने को कहते हैं।

जब भाई-बहन में खिट-पिट हो जाती है तो मुझे ही डाँटते हैं।

करिअर के लिए बोलते रहते हैं।

क्या आप अपने आप ही जज करते हो, मेरे पेरेन्ट्स मुझसे प्रेम नहीं करते? लेकिन कभी पेरेन्ट्स के दृष्टिकोण से देखा है? तो उसके लिए देखते हैं ज्ञानी की एक झलक...

**प्रश्नकर्ता :** माता-पिता बहुत रोक-टोक करते हैं और इसीलिए बच्चों को प्रेम नहीं मिलता। उसकी वजह से ही वे लोग बाहर प्रेम ढूँढते हैं, ऐसा मैंने सुना है। यह सुनकर मुझे लगा कि, मुझे भी घर के बड़े रोक-टोक करते हैं और प्रेम भी तो सभी देते ही हैं, सभी मेरी ज़िद पूरी करते हैं। जो चाहिए वह मुझे देते हैं, सिर्फ कुछ बातों में ही किच-किच हो जाती है और उन लोगों की मेरे प्रति चिंता भी मुझे दिखाई देती है। लेकिन एक बार भी वे लोग डाँटते करते हैं तो उनका हर बार का जो प्रेम होता है वह हम भूल जाते हैं।

**पूज्यश्री :** अच्छा निष्कर्ष निकाला है, यह सभी को समझाने जैसा है। मम्मी-पापा का प्यार हमारे प्रति होता ही है। हमारी सेफसाइड के लिए मम्मी-पापा सोचते हैं, हमारा ध्यान रखते हैं, मम्मी-पापा का कितना पॉज़िटिव है, लेकिन किसी दिन यदि किच-किच करते हैं तो हमारा दिमाग़ छटक जाता है, उनके पूरे प्रेम को ज़ीरो कर देते हैं, चौकड़ी मार देते हैं, यह गलत कहा जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** उसमें यह किस प्रकार से समझें और कैसी सेटिंग करें, वह मुझे समझाएँगे?

**पूज्यश्री :** उसमें मम्मी-पापा का कैसा है कि यदि कोई इंसान एक बार हैल्प करता है तो उसको पूरी ज़िंदगी नहीं भूलते। दादा क्या कहते कि किसी ने मुझे चाय पिलाई हो न, तो पूरी ज़िंदगी उसका उपकार नहीं भूलता, तो मम्मी-पापा ने ध्यान तो रखा होगा न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**पूज्यश्री :** बोलो, जन्म लिया तब से अभी तक कितना सब सँभालना होगा? बीमारी में, खाने-पीने में, खुद कम खाते हैं। मैंने तो देखा है कि दूध के पाउडर की चाय बनाकर पिलाते, बोलो, पैसे नहीं होते तो खुद नहीं खाते लेकिन कैसे भी करके बच्चों को खिलाते हैं, खुद के लिए नए कपड़े नहीं लाते लेकिन हमारे लिए नए कपड़े ले आते हैं। यदि माता-पिता के पॉज़िटिव गुण देखेंगे तो पूरी ज़िंदगी उपकार नहीं भूलेंगे। और यदि किच-किच करते हों या गलती निकालते हों, तो उसके बजाय प्रेम से बातें करो न! अकुला जाना, ऐसा सब करने की कोई ज़रूरत नहीं है। समझ में आता है न? धीरे-धीरे प्रेम वाला होना पड़ेगा न! हमें समझना चाहिए कि हमारे कुछ भले के लिए कहते होंगे, चलो मुझे सुधरने की ज़रूरत है, मुझे समझाइए कि अपनी भूल कैसे सुधारूँ, फिर सॉल्यूशन लाना है।

# महान पुरूष

समर्थ गुरु रामदास अपने सभी शिष्यों में छत्रपति शिवाजी को बहुत चाहते थे। अन्य शिष्य अंदर-अंदर बातें करते कि शिवाजी सम्राट हैं इसलिए गुरु जी उन्हें हम सभी से ज्यादा चाहते हैं। स्वामी रामदास को जब इस बात का पता चला तब उन्होंने शिष्यों का भ्रम दूर करने का निश्चय किया। एक दिन स्वामी रामदास शिवाजी सहित सभी शिष्यों को लेकर जंगल में से जा रहे थे। शाम हो रही थी इसलिए जंगल में ही एक सुरक्षित जगह पर रात को रुकने का तय किया। खाना खाकर सभी सो गए और थोड़ी ही देर में स्वामी रामदास की कराहने की आवाज़ सुनाई दी। सभी शिष्य जाग गए और गुरु जी से कराहने का कारण पूछा तो रामदास ने बताया कि, "उनके पेट में दर्द हो रहा है।" अन्य शिष्य गुरु को कराहते देख रहे थे लेकिन शिवाजी ने पूछा, "गुरु जी आपके इस पेट दर्द को मिटाने का कोई उपाय है?"

# की झाँकी

गुरु जी ने कहा, "यदि किसी सिंहनी का दूध दवा के रूप में लिया जाए तो यह दर्द मिट जाएगा।" शिवाजी एक क्षण की भी देर किए बिना बर्तन लेकर रवाना हो गए और कुछ ही देर में उस बर्तन में सिंहनी का दूध लेकर वापस आ गए।

अपनी जान की परवाह किए बिना गुरु जी के लिए दूध लेकर आए हुए शिवाजी को देखकर स्वामी रामदास ने अन्य शिष्यों से कहा, "देखो सभी, यह शिवा अपनी जान पर खेलकर मेरे लिए सिंहनी का दूध लाया है। अब तुम्हें समझ में आया कि शिवाजी के प्रति मेरा स्नेह ज्यादा क्यों है? मेरे पेट में कोई दर्द नहीं है। यह तो सिर्फ आपकी भ्रांति दूर का मेरा प्रयास था। मुझे लगता है कि मैं अपने प्रयास में सफल रहा हूँ।"

**किसी का प्रेम प्राप्त करना हो तो खुद को समर्पित करना पड़ता है। जिन्होंने शिष्यत्व स्वीकार किया हो ऐसे गुरु को अपना सर्वस्व अर्पण करने वाला शिष्य अन्य शिष्यों से कई अधिक कृपा प्राप्त करता है।**

# छत्रपति शिवाजी

# क्या आपको आकर्षण के पीछे का रहस्य पता है?

जैसे कील का लोहचुंबक के प्रति आकर्षण है, वैसा ही स्त्री-पुरुष का आकर्षण है।

# लोहचुंबक

और कील यहाँ पड़े हैं, जब लोहचुंबक को कील के ऊपर घुमाएँगे तो कील ऊँची-नीची होगी या नहीं? होगी। लोहचुंबक को नज़दीक रखेंगे तो कील उससे चिपक जाएगी। कहो! कील में आसक्ति कहाँ से आई? उसी प्रकार शरीर में लोहचुंबक नामक गुण है। क्योंकि अंदर इलेक्ट्रिकल बॉडी है इसलिए उस बॉडी के आधार से इलेक्ट्रिसिटी बनती है। उससे शरीर में लोहचुंबक नामक गुण उत्पन्न हो जाता है। जहाँ अपने परमाणु मिलते आते हैं वहाँ आकर्षण उत्पन्न हो जाता है और अन्यों के साथ कुछ नहीं। जिस प्रकार लोहचुंबक लोहे को खींचता है, किसी अन्य धातु को नहीं खींचता, उसी प्रकार आपके अंदर सभी खिंचाव-आकर्षण होते हैं लेकिन वहाँ जागृति रखनी चाहिए। नहीं तो मार खाना पड़ेगा।

यदि सिर्फ आकर्षण होता है तो उसे हम पसंद करते हैं, लेकिन वापस विकर्षण होगा। कभी अच्छा लगता है, कभी कड़वा लगता है। भाई चाहे कितना भी अच्छा हो, लेकिन यदि बहन से दो उल्टे शब्द बोल दिए कि, "तू बेअक्कल है", तो फिर बहन को लगता है कि, "मुझे बेअक्कल कहा?" यानी उसे कड़वा लगता है। इसलिए इस जगत् में सिर्फ आकर्षण ही नहीं होता बल्कि विकर्षण भी होता है। यदि विकर्षण नहीं होगा तो फिर आकर्षण भी नहीं होगा। और यदि सिर्फ आकर्षण होगा, तो भी सब लोग बोर हो जाएँगे।

AKRAMPEDIA

**नाम : आयूष मेहता**

**उम्र : १८ साल**

हैल्लो फ्रैन्ड्स, क्या चल रहा है? मज़ा है न? फरवरी का महीना अपने साथ "सीज़न ऑफ लव" लेकर आ रहा है। वेलेन्टाइन्स डे आते ही पता नहीं कहाँ से वातावरण में प्रेम छा जाता है।

वैसे तो, आज से २ साल पहले जो हुआ था, उससे मुझे "प्रेम" शब्द के प्रति द्वेष हो गया था। मेरा खास दोस्त आयान, "सीमा" नाम की एक लड़की के प्रेम में पड़ गया था। जब से सीमा उसके जीवन में आई थी, तब से उसके पास मेरे लिए समय ही नहीं था। लेकिन फिर भी हमारी दोस्ती, वैसी ही गहरी थी। मुझे याद है, दो साल पहले का १२ फरवरी का दिन कि जब आयान ने फोन करके मुझे तुरंत मिलने बुलाया था। उसकी आवाज़ से वह किसी तकलीफ में है ऐसा लग रहा था। मैं थोड़ी ही देर में उसकी बताई हुई जगह पर पहुँच गया। मुझे देखते ही वह मुझसे लिपट गया। "क्या बात है, आयान?", मैंने पूछा। "ले, तुझे मेरी बाइक और मोबाइल बहुत अच्छा लगता है न?" कहते ही आयान ने अपनी बाइक की चाबी और मोबाइल, मेरे हाथ में दे दिया। मैंने उसके इस विचित्र वर्तन का कारण पूछा। उसका जवाब सुनकर मैं हैरान रह गया। आयान और सीमा, वेलेन्टाइन डे के दिन बलिदान देने वाले थे। "लेकिन तुझे मरना क्यों है?" मैंने उसका बेवकूफी भरा निर्णय सुनकर पूछा। "मेरे मम्मी-डैडी हमारे संबंध को मंजूरी नहीं देंगे। क्योंकि मैं मुसलमान हूँ और यह हिन्दू है। हम दोनों साथ में जी नहीं सकते लेकिन मर तो सकते हैं न? फिर अगले जन्म में फिर मिलेंगे!", आयान एक ही श्वास में बोल गया।

"आयान, तू क्या करने जा रहा है उसका तुझे होश है? यह समस्या का समाधान लाने का तरीका नहीं है।"

"नहीं, दुनिया को पता चलना चाहिए कि, हमारा प्रेम सच्चा है और तू मेहरबानी करके मुझे इस मामले में कुछ सलाह मत दे!" वह बोला। मैंने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन जैसे उसे कुछ समझना ही नहीं था वैसे वह वहाँ से रिक्शा में बैठकर चला गया। लेकिन मेरे मन में बहुत सारे विचार छोड़ गया। "क्या इसे ही प्रेम कहते हैं? साथ में जीना-मरना वही सच्चा प्रेम? आज मुझे पहली बार "प्रेम" के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई थी। मैंने गूगल में "TRUE LOVE" लिखा, तभी बहुत सारे लिंक आ गए, उसमें से मैंने एक लिंक पर क्लिक किया। उसमें एक वीडियो आया। वह वीडियो, "प्रेम" की किताब पर हुए पारायण का था। वह वीडियो देखते ही मुझे सारे सवालों के जवाब मिल गए और मुझे लगा कि, उसे देखने से आयान को भी बहुत मदद होगी। इसके लिए उसके घर फोन करके, उसे अंतिम बार मिलने की इच्छा व्यक्त की। पहले तो उसने बहुत

आनाकानी की लेकिन फिर वह मुझसे मिलने के लिए मान गया।

दूसरे दिन आयान मुझसे मिलने के लिए मेरे घर आया। हमने साथ में लेपटॉप पर मूवी देखी और थोड़ी देर बाद मैंने रात को देखा हुआ सत्संग का वीडियो चला दिया। पूज्य दीपक भाई का निर्मल हास्य और मृदु आवाज़ सुनकर वह उस वीडियो देखने में खो गया।

सत्संग सुनने के बाद आयान दुविधा में पड़ गया। थोड़ी देर में कुछ काम है कहकर आयान निकल गया। मैं आयान के लिए प्रार्थना करने लगा।

वेलेन्टाइन डे आ गया। मुझे आयान की चिंता होने लगी थी। उसका मोबाइल मेरे पास था और मैंने उसके घर कई बार फोन किया लेकिन वह घर पर नहीं था। शाम के करीब पाँच बजे मेरा फोन बजा।

हाश! वह जीवित था। उसने कहा, "आयुष, दादा और पूज्यश्री सही कहते हैं... यह सच्चा प्रेम नहीं था। मैंने अपने प्रेम की परीक्षा लेने का प्रयत्न किया। मैं और सीमा अपनी-अपनी ज़हर की बोतल लेकर मरीन ड्राइव पर मिलें। उसके ड्रेस के बारे में उल्टा बोलकर, मैंने उसे उकसाने की कोशिश की, "अपने जीवन के अंतिम दिन तू इतना बेकार ड्रेस पहनकर क्यों आई है?" "यह मेरी सब से प्रिय ड्रेस है। इसे बेकार कहने की हिम्मत कैसे हुई?" कहकर ज़हर की बोतल फैंककर, वह चली गई। फिर मैंने बोतल खोलकर देखा तो वह चॉकलेट सिरप था!

"आयुष, मेरे भाई, मेरा जीवन बचाने के लिए खूब-खूब आभार... मैं तेरा ऋणी हूँ।"

बहुत अच्छा, All's Well That Ends Well इस प्रेम कथा का अंत सुखद था, लेकिन अलग प्रकार से।

मुझे और आयान को प्रेम की सीख मिल गई और हमने प्रतिज्ञा की कि, ऐसे प्रेम से दूर ही रहेंगे। दादा आपका खूब-खूब आभार और प्रेम ढूँढ रहे सभी के लिए शुभेच्छा! आशा रखता हूँ कि इस पोस्ट से आपको फायदा होगा। हैप्पी वेलेन्टाइन डे!

# दादाश्री की पुस्तक की झलक

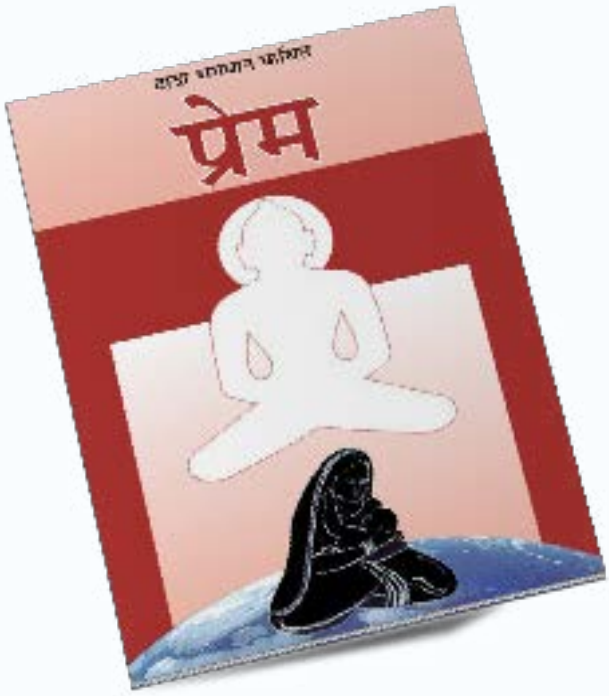


### प्रेम की यथार्थ व्याख्या!

कबीर साहब ने प्रेम की व्याख्या बताई है "घड़ी चढ़े, घड़ी उतरे, वह तो प्रेम ना होय, अघट प्रेम ही हृदय बसे, प्रेम कहीए सोय।"

**प्रश्नकर्ता :** सच्चा प्रेम किसे कहेंगे?

**दादाश्री :** सच्चा प्रेम जो घटे-बढ़े नहीं वह! हम ज्ञानियों का प्रेम ऐसा होता है, जो बढ़ता-घटता नहीं है। हमारा ऐसा सच्चा प्रेम पूरे वर्ल्ड पर होता है।

### मोह वाला प्रेम, बेकार

**प्रश्नकर्ता :** प्रेम और मोह, उसमें मोह में न्यौच्छावर होने में बदले की आशा है और प्रेम में बदले की आशा नहीं है। प्रेम में न्यौच्छावर होता है वह पूर्ण पद को प्राप्त करता है?

**दादाश्री :** इस दुनिया में यदि कोई भी इन्सान सत्य प्रेम की शुरुआत करता है तो वह भगवान बन जाता है। सत्य प्रेम विशुद्ध होता है। उस सत्य प्रेम में विषय नहीं होता, लोभ नहीं होता, मान नहीं होता। ऐसा विशुद्ध प्रेम इंसान को भगवान बना देता है। रास्ते तो सभी आसान हैं, लेकिन ऐसा होना मुश्किल है न!

## सिन्सियरिटी वहाँ सच्चा प्रेम

सामने वाला चाहे कितना भी धोखा दे, आमने-सामने चाहे जितने भी प्रोमिस तोड़े लेकिन फिर भी सिन्सियरिटी नहीं जानी चाहिए। सिन्सियरिटी सिर्फ वर्तन में ही नहीं लेकिन आँखों में से भी नहीं जानी चाहिए। तब समझना कि यहाँ प्रेम है। इसलिए ऐसा प्रेम ढूँढना। यह बाहर जो चल रहा है, वह बाज़ारू प्रेम-आसक्ति है। वह विनाश लाएगा।

## व्यवहार में माँ का प्रेम उत्कृष्ट

सच्चा प्रेम तो किसी भी संयोग में टूटना नहीं चाहिए। इसलिए प्रेम उसे कहेंगे कि जो टूटे नहीं। यह तो प्रेम की कसौटी है। फिर भी यदि कहीं प्रेम है तो वह माता का प्रेम है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने ऐसा कहा कि माता का प्रेम हो सकता है, तो क्या पिता का नहीं होता? तो उन्हें बुरा नहीं लगेगा?

**दादाश्री :** फिर भी माता का प्रेम होता है, उसका भरोसा होता है। माँ बच्चे को देखने से ही खुश हो जाती है। इसका कारण क्या है? कि बच्चा अपनी माँ के पेट में नौ महीना रहता है फिर जन्म लेता है इसलिए माँ को ऐसा लगता है कि मेरा बेटा है। इसलिए एकता हो जाती है। माँ ने जो खाया उससे उसका खून बनता है। इसलिए यह एक प्रकार का एकता का प्रेम है। फिर भी सचमुच "रियली स्पीकिंग" यह प्रेम नहीं है। "रिलेटिवली स्पीकिंग" प्रेम है। इसलिए प्रेम किसी जगह होगा तो माँ के साथ होगा। वहाँ प्रेम जैसा कुछ दिखाई देता है।

## गुरु-शिष्य का प्रेम

शुद्ध प्रेम से सभी दरवाज़े खुल जाते हैं। गुरु के प्रेम से क्या नहीं मिलता? सच्चे गुरु और शिष्य के बीच में तो प्रेम की कड़ी इतनी अच्छी होती है कि गुरु जो बोले, वह उसे बहुत अच्छा लगता है।

## जहाँ आसक्ति वहाँ "रिएक्शन"

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कई बार हमें द्वेष नहीं करना होता फिर भी द्वेष हो जाता है, उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** किसके साथ?

**प्रश्नकर्ता :** कभी पति के साथ ऐसा हो तो?

**दादाश्री :** वह द्वेष नहीं कहा जाता। हमेशा जो आसक्ति का प्रेम है न, वह रिएक्शनरी है। इसलिए जब चिढ़ जाता है तो उल्टा चलता है। उल्टा चलने से कुछ दिन अलग रहते हैं फिर वापस प्रेम बढ़ता है और फिर से प्रेम दिखाई देता है। और जब आसक्ति बढ़ती है तो टकराव होता है। और फिर वापस प्रेम बढ़ता है। जब ज्यादा प्रेम होता है तब दखल हो जाती है। तो जहाँ कुछ भी दखल चलती है न, वहाँ उन लोगों को अंदर प्रेम है! प्रेम होता है तभी दखल होती है। पिछले जन्म का प्रेम है इसलिए दखल होती है। ज्यादा प्रेम है। वर्ना दखल नहीं होगी न! इस दखल का रहस्य भी यही है।

उसे लोग क्या कहते हैं? "टकराव से तो हमारा प्रेम बढ़ता है।" तो बात सही है लेकिन यह आसक्ति टकराव से ही हुई है। जहाँ कम टकराव, वहाँ आसक्ति नहीं होती। जिस घर में स्त्री-पुरुष का टकराव कम होता है वहाँ आसक्ति कम होती है, ऐसा मान लेना है। समझ में आए ऐसी बात है?

# सच्चे प्रेम की समीक्षा (लव टेस्ट)

निम्नलिखित प्रवृत्ति करके आप किसी एक व्यक्ति के लिए आपका प्रेम सच्चा है या आसक्ति है, यह जान पाओगे।

**जिस व्यक्ति से आप प्रेम करते हो, उसे याद कीजिए और नीचे के प्रश्नों का "हाँ" या "ना" में जवाब दीजिए।**

१. जब वह आपका कहना नहीं माने, तब आपको उसके लिए "नेगेटिव" विचार आते हैं? हाँ/ना

२. उसकी अनुपस्थिति में आपको अच्छा नहीं लगता? हाँ/ना

३. क्या आपकी खुशी उस पर आधारित है? हाँ/ना

४. आपको जो चीज़ चाहिए वह नहीं मिले या उस व्यक्ति के प्रति की आपकी अपेक्षा पूरी नहीं हो तो आपको दुःख होता है? हाँ/ना

५. आप जिसे प्रेम करते हो, उसके लिए आपको कोई शिकायत रहती है? हाँ/ना

६. आप जिसे प्रेम करते हो, उसे आपसे दुःख होता है? हाँ/ना

७. आपको कभी भी उसका दोष दिखता है? हाँ/ना

८. कभी ऐसा लगता है कि आप उसे प्रेम करते हो और कभी ऐसा लगता है कि आप उससे घृणा करते हो? हाँ/ना

९. क्या आपको उसके भले के लिए विचार आते हैं? हाँ/ना

१०. क्या आप उसे उसके पॉज़िटिव गुणों के लिए प्रोत्साहन देते हो और उसके नेगेटिव लक्षणों के लिए तटस्थ रहते हो या मौन रहते हो? हाँ/ना

११. क्या आप उसके कल्याण के लिए प्रार्थना करते हो? हाँ/ना

१२. उन्हें कोई चीज़ या बलिदान देते समय आप हिचकिचाते हो? हाँ/ना

१३. आप दिल से उसकी प्रशंसा करते हो? हाँ/ना

१४. यदि वह व्यक्ति आपकी इच्छा अनुसार या इच्छा विरुद्ध आचरण करे तो दोनों परिस्थितियों में आपका प्रेम यथावत रहता है? हाँ/ना

अब, नीचे दिए वृत्त में नंबर के अनुसार यदि आपका जवाब "हाँ" हो तो कोई एक कलर पेन से वहाँ कलर करो।

तो देखिए आपका वृत्त का कलर क्या है?

यदि वह वृत्त कलर वाला हो तो वह सच्चा प्रेम है।

यदि वृत्त का बिना कलर रहा तो वह संसारी आसक्ति है। जिसे सच्चे प्रेम में बदला जा सकता है।

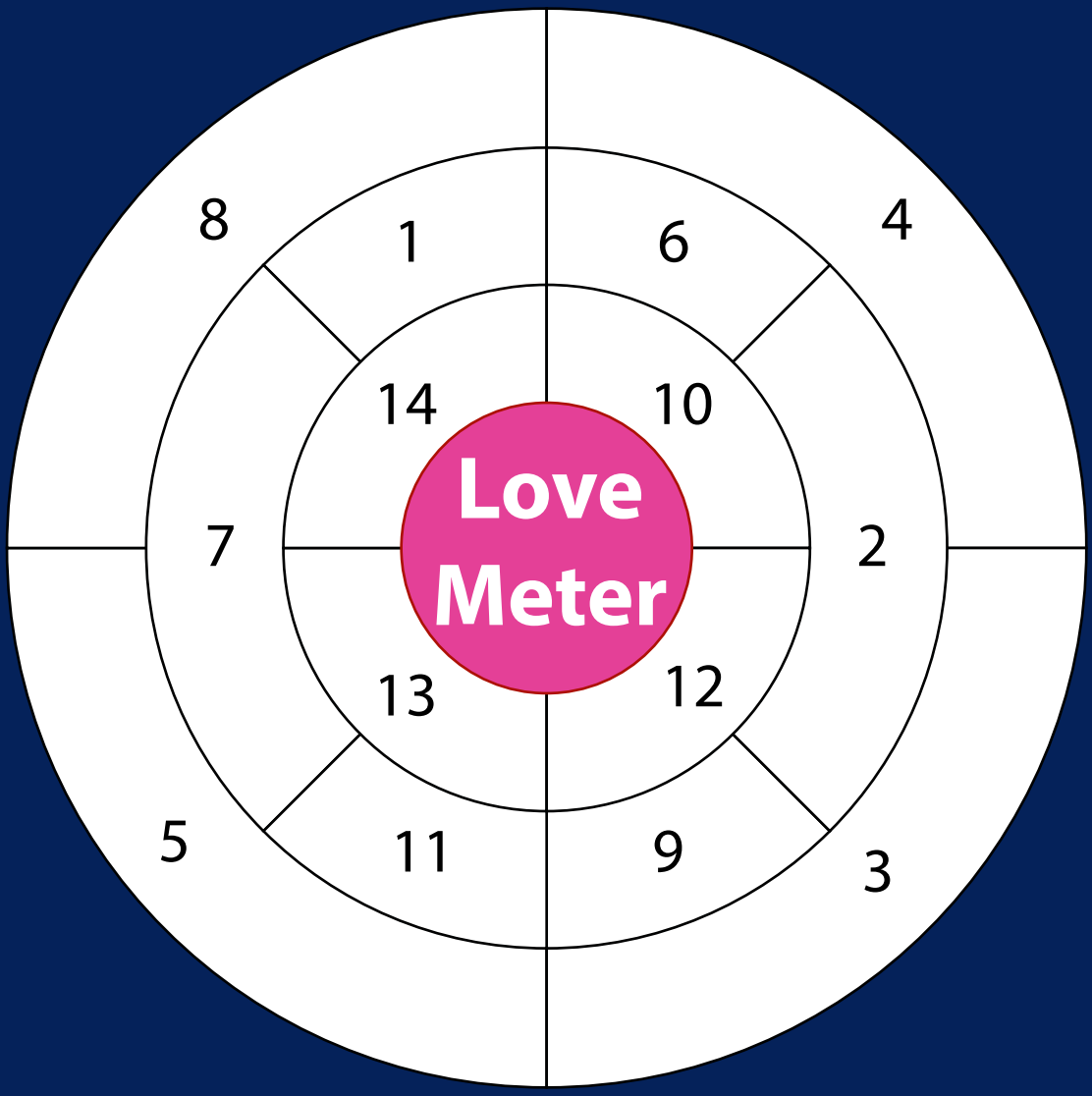

# जोक्स

१. बंता की प्राणी संग्राहालय में नौकरी लगी। एक दिन पिंजरे की सफाई करते समय उसने शेर का पिंजरा खुला छोड़ दिया। साहब ने उसे बुलाकर डाँटा, "तुमने शेर का पिंजरा खुला क्यों छोड़ दिया?"

बंता : "क्या साहब, इतने खतरनाक जानवर की चोरी कौन करेगा?"

२. इन्टरव्यू लेने वाला : "तुम्हारा क्वोलिफिकेशन क्या है?"

बंता : "मैं पी.एच.डी. हूँ"

इन्टरव्यू लेने वाला : "पी.एच.डी.?"

बंता : "हाँ, पास्ट हाईस्कूल विद डिफिकल्टी"

३. एक मंदिर के पुजारी जी नया डी.वी.डी प्लेयर लेकर आए।

अच्छा मुहूर्त, अच्छी घड़ी और अच्छा समय देखकर उन्होंने विधिपूर्वक डी.वी.डी चालू किया, लेकिन चालू करते ही बिगड़ गया!

क्यों? क्योंकि प्लेयर पर नारियल फोड़ा था!!

# I Spread Happiness

presents

# WISDOM Workshop

## for students

### વિદ્યાર્થીઓ માટે સાચી સમજણ

I have achieved great results through wisdom. have you?

अब मैं
3 घंटे की पढाई
1 घंटे में
कर सकता हूँ.

**A Dada Bhagwan Foundation Project**

Eligibility:

- Std. 8 and above
- Boys students only

Note:

- Please bring a Notebook and Pen to the workshop.
- Fees inclusive of Lunch and Afternoon snacks.
- Hurry! Limited seats only.

**For Registration, visit www.ispreadhappiness.com**

वर्ष : ५, अंक : ९
अखंड क्रमांक : ५७
जनवरी २०१८

# अक्रम यूथ

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.